श्री

वैद्य विजय.

धर्मार्थ काम मोक्षाणां शरीरं साधनं यतः

अतो रक्ष्य स्वतुं रक्षेन्नरः कर्मविपाक वत् ॥

अष्टविध परीक्षा

तथा

काळज्ञान.

रची छपावी प्रसिद्ध करनार

शा. तिलकचंद ताराचंद वैद्य.

प्रथमावृत्ति. प्रति १०००

संवत १९७२. सने १९१६

मूल्य

वैद्यक शीखवा कोई पण विद्यार्थीने

मफत.

छपावी प्रसिद्ध करनार—शा. तिलकचंद ताराचंद वैद्य.

प्रसिद्ध करनारनुं ठेकाणुं—महिधरपरानी घीयाशेरीना टेकरा उपर—सुरत.

छापनार—प्रभुशंकर नरभेराम व्यास.

छापवानुं ठेकाणुं—खुबचंद अमीचंदना धी सुरत "जैन" एन्जीन
प्रिन्टींग प्रेसमां खपाटीआ चकलो—सुरत.

वैद्य विजय.

॥ मंगलाचरण ॥

अनुष्टुप छंद.

वंदु जगत्पति स्वामि विभु कल्याण कारक;
वंदु सर्वज्ञ सर्वात्मा प्रभु जगदुद्धारक. १

शार्दूल विक्रीडित छंद.

वंदु विश्वपति दियो शुभ मति रुडी गति ज्ञानमां,
दीसे सार अपार अद्भुत कळा व्योमादि संस्थानमां;
आकाशे अति शोभता गृह गणो तेजस्वि तेजे भर्या,
चाले निम धरी सहु निज पथे भारे नियमो कर्या. २
वृक्षो नौतम जातनां अवनिमां ऊंचां दीसे ओपतां,
पूष्पो छोडलता तथा तरुवरो नाना विधि शोभता;
संख्या सर्वनी केम हुं कहुं कथी विचारतां विसरुं,
त्हारी शक्ति अपार पार न लहुं दासत्वथी करगरुं. ३

मंदाक्रान्ता छंद.

विश्वाधारा विनति करवा विश्वमां एक तुं छे,
बीजो कोई तुज विण नथी एमां आश्चर्य शुं छे;
बीजा देवो भमता भवमां उलटी आश राखे,
निस्वार्थे तुं जगत जनने सत्यनो मार्ग दाखे. ४

दुर्मिला छंद.

कर व्हार विभु दुःखमां डुबतां भवसागर पार ऊतार मने,
मनमांहीं अति किल्बिष भर्युं तरवानुं नथी बळ आतमने;
त्हमने विनति करी एम वदुं बळ बुद्धि दीयो दृढताज मने,
जमने जितवा सत्कर्म करुं पछीथी न गणु दुःख सागरने. ५

छपय छंद.

कर करुणा जगदिश शिश नमावुं स्वामि,
जगतारण जग तात आप छो अंतरयामि;
अलख अगोचर नाथ विभु अजरामर आप,
करुं विनति करजोड टाळ त्रिविधना ताप;
पाप काप संताप हर आप मति रुडी अने,
रचुं ग्रंथ हुं गुण भर्यो ते शक्ति आपो मने. ६

मोतिदाम छंद.

प्रभु परमातम पुरणानंद, विभु अजरामर आनंदकंद;
तमे करो सेवकनी प्रतिपाळ, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. ७
रच्युं निज शक्ति थकी जग जेह, पार मुनी पंडित पामे न तेह;
रहे सुखी सर्व युवा वृद्धबाळ, दीयो मति औषध ज्ञान विशाळ. ८
वनस्पति औषधि वृक्ष अनेक, कर्या गुण जूजुवा जूजुवा छेक;
फळो मुळकंद त्वचा तणो ताल, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. ९
कराववा जगत महीं उपकार, रहे सुखी जेह थकी नरनार;
सुखी सहु थाय मटे दुःख झाळ, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. १०
रहे नहीं रोग शरीरमां रंच, करे परमाण मळी जन पंच;
फरे सुखी सर्व थइ ऊजमाळ, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. ११
शिशुपणुं छेक नथी मुज ज्ञान, रह्युं ठरी अंतरमां अभिमान;
दुःखी रंक जाणी दुरगुण टाळ, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. १२
करी करुणाज दीयो शुभ पंथ, रचुं शुभ वैद्य विजयनो ग्रंथ;
रखे पडे चूक करो प्रतिपाळ, दियो मति औषध ज्ञान विशाळ. १३

भुजंगी छंद.

महा बुद्धिवंता थया कै कविओ, करी सांभली वारता के नविओ;
नितिवंतको संत थै तत्वज्ञानी, करी छे कविता बहु मन मानी १४

गीरा गुर्जरी गुर्जरी गुणवाळा, रसो वर्णव्या काव्य छंदो रुपाळा,
दिसे तर्कमां गर्क छे वात ताजी, रुडी किर्ति जेथी रही जग्त गाजी. १५

करी कल्पनां अल्पना कल्प बांध्या, फरी देवथी देवीनां मंत्र साध्यां,
पडी लक्षमां वात पोते उतारी, वडी जुक्तिथी ते रच्या काव्य भारी. १६

कर्या छंद ते तो सहु विश्व जाणे, सुणी शीश धुणे मुखे ते वखाणे;
मधुरि मधुरि मधु मिष्ट वाणी, कहो पार क्यांथी मळे वाणीपाणी; १७

भर्यो शब्द भंडार समुद्र सारो, दिसे आर के पार क्यांथी किनारो,
लहे जेह वस्तु पळे मंन जेनुं, जडे तर्कथी खोळतां तत्व तेनुं. १८

नितिथी रच्यां शास्त्र साहित्य सारां, हजो ते कविने नमस्ते हमारा,
अवि दिन विहीन छुं बाळ ज्ञानी, क्षमा दोष म्हारा करो तत्व ज्ञानी. १९

नथी काव्य शक्ति नथी तर्क शक्ति, अलंकार युक्ति न जाणुं विभक्ति
तथापी कृपा श्री गुरु राज पांमी, करुं गुंथणी ग्रंथनी शिश नामी. २०

ग्रंथ प्रयोजन.

वसंत तिलका छंद.

जे जे थया कविवरो गुजरात मध्य,
ते ते गया लखि बहु रस काव्य पद्य;
निति वधे नियमथी शुभ कार्य कीधुं,
किन्तु शुभौषध भणी नहि लक्ष दीधुं. २१

जो सामळे छपयमां बहु निति भाखी,
वेदान्त वाक्य लखि अखे मणा न राखी;
ज्ञाने निमग्न थई अमृत पान पीधुं,
किन्तु शुभौषध भणी नहीं लक्ष दीधुं. २२

प्रिति भर्यो प्रियतमेज रच्या रुपाळा,
श्रृंगार वरणन कर्यो वृजवासी बाळा;
बाळा रसो वरणवी, सुख मानी लीधुं,
किन्तु शुभौषध भणी नहीं लक्ष दीधुं. २३
जैनि कवि कवित्वथी समकित पामे,
प्राक्तन्न जन्म कृत फळो दुःख देह वामे;
वैराग्य पामी मन कर्मथी रेछ बीधुं,
किन्तु शुभौषध भणी नहीं लक्ष दीधुं. २४
निति थकी गुण वधे सुख सर्व ठामे,
छंदो रच्या रस भर्या दलपतरामे;
पोते कविश्वर थई शुभ कार्य कीधुं,
किन्तु शुभौषध भणी नहीं लक्ष दीधुं. २५

शार्दूल विक्रीडित छंद.

प्रेमानंद पुराण भारत रच्युं पान्डु तणी ख्यातमां,
रामायण रसरुप ते गीरधरे छंदो कर्या नाट्यमां;
ए आदि गुजरातमां बहु थयां काव्यो रुडी भातमां,
दीधुं लक्ष नहीं अरे कवि वरे वैद्यो तणी वातमां. २६

उद्देश.

इंद्र विजय छंद.

कविता करीने कीरति उचरुं,
गुण गाऊं कदि गुणवंत तणा;
प्रति बोध करुं कोई म्हाजनने,
मळे नाम इनाम के गाम घणां;
परने उपकार थशे न कदी,
यदि द्रव्य मळे के मळे दक्षणा;
पर पीड हरी फरी सुख दीये,
रचना करुं ग्रंथ रहे नमणा. २७

झुलणा छंद.

गुंथणी ग्रंथनी गुंथवा मन करुं,
अति धरुं हाम छे काम मोटुं;
एक उपदेश मम गुरु तणो मन वस्यो,
अवर डंफाणने जाणुं खोटुं;
परने पीडा सम्रु पाप जगमां नथी,
पुन्यको हरण पर दुःख जेवुं;
ताप तनना समे व्याधिने ते दमे,
आदरुं ग्रंथनुं रुप एवुं. २८

विषय वैदक तणो विस्तर्यो अतिघणो,
ऋषी मुनि द्वारनां ग्रंथ झाझा;
भाषा संस्कृतथी संस्कार ते पामिया,
काव्य रस जामियां मोटी माझा;
चरक सुश्रुत हारित माधव वळी,
वाग भट भाव मिश्रे वखाणी;
कै कवि थई गया ग्रंथ तेना रच्या,
काव्य विचित्र विचित्र वाणी. २९

भाष्य तेनां थयां भाषा गुजरातिमां
गद्यमां वरणव्या गुण भारी;
पण नहीं तेह अभ्यासथी मुख चढे,
बहु पडे श्रम हृदे जो विचारी;
पद्यमां थाय तो रस बहु उपजे,
मुखथी थाय जीह्वाग्र सर्वे;
एम जाणी कविता करुं रसभरी,
टाळवा दुष्ट रोगादि गर्वे. ३०

हरिगीत छंद.

कवता सहुने करगरी करुं विनति ल्यो लक्षमां,
रस भंग के गण दोष निरमळ बुद्धिथी करजो क्षमा;
परमार्थ बुद्धिए रचुं गुणवंत ग्रंथ गुणे भर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३१
दीसे घणा रस खुदरती नव रंग भूमि जामियो,
बहु विध वनस्पति तृण लता फळ देखी आनंद पामीयो;
छे जुजवा गुण तेहना आश्चर्य रुपे रस ठर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३२
जीह्वा त्वचा विचार नाडी ज्ञान मळ मुत्रो तणुं,
शब्द स्पर्श ने रुपनी करवा परिक्षा ते भणुं;
एम अष्ट विध करवा विवेचन लक्ष मुज मनमां कर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३३
रोगो तणा विचार साध्या साध्य ओलख आपवा,
कहुं काळ ज्ञान प्रसस्थ पुरण भान वैद्योने थवा;
रस धातु मळ क्षय वृद्धि ए गुण दोष शुं ते मन धर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३४
रोगो तणा नीदान संख्या लक्षणो तेना लहुं,
बस्ती विरेचन वमन विधियो नस्य आदिनी कहुं;
कहुं डाग पोत विधान जेवो आर्श ग्रंथे आचर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३५
कहुं पंच पंच कशाय प्रथमे अंग रस वृक्षो तणा,
वळी फांट हीमने कल्क पंचम क्वाथना विधियो घणा;
वळी चुर्ण गोळी तैल घृत अमृत तणे झरणे झर्यो,
मुज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. ३६

सूवर्ण चांदी आदि धातु सप्त ने उप धातुओ.
करी शुद्धि संस्कारे फरी मारो टळे उपाधीओ;
विधिवत्त भष्म रसायने दुःख रोग भयथी उगर्यो,
मूज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो, १७

जेम व्याधी शत्रुनी फोजमां हथीयार औषध कर गृही,
जे सुभट वैद्य भडवीर योध्धा अरी दळ मध्ये रही;
करी चूर्ण व्याधी फोज पामे विजय रशमें आदर्यो,
मूज श्रम सफळ त्यारे थशे यदि एक नर दुःखथी तर्यो. १८

मनहर छंद,

बंडखोर बंडथी अखंड त्रास वरतावे
राजा दंड करी दुःख प्रजा तणा टाळे छे,
काम क्रोध लोभ आदि अंतरना बंडखोर
तेने योगीराज ज्ञान शांति थकी बाळे छे;
निति रिति प्रिति भिति तजी अनितिये चढे
तेने गुरु राज्य धर्मोपदेशथी वाळे छे,
राजा योगी धर्म गुरुके प्रजा रोगे पीडाय
वैद्यराज औषधथी संकट प्रजाळे छे, ३९

वैद्य लक्षण

शार्दूल विक्रीडित छंद.

आयुर्वेद विचारजे गुरु थकी निश्चे करीने भण्यो.
वेत्ता सर्व क्रिया तणो कुशळ ते धीमंत सुरो गण्यो.
उद्योगी मुखमिष्ट वाणी वदतो निर्लोभ शांति भर्यो,
साध्या साध्य विचारी औषध दीये सद्वैद निश्चे ठर्यो. ४०

निषेध वैद्य.

उपजाति छंद

मेळो मूखे कर्कष वाणी बोले,
गर्विष्ट ग्रामिण कुठार तोले
आवे कदापी अण तेडवाथी
धन्वंतरी तो पण काळ भाथी

रोगी लक्षण ।

तोटक छंद,

धरि धैर्य अने विसवासे रहे, निज विति हकीकत सर्व कहे,
करी पथ्य रहे वश वैद्य तणे दुःख शांति थये उपकार भणे ४२
नथी जो गयो वर्ण शरिर तणो रहे इंद्रीय निग्रह रोगी घणो
कहे वैद्य यथा विधि तेम करे, नाकि औषध योग्य ते रोगी खरे. ४३

वैद्यनुं कर्तव्य.

प्रमाणीका छंद.

सुवैद्य कार्य एटलुं के जोर व्याधी केटलुं,
करीज सिद्ध रोगने पछी विचार योगने. ४४
समाय रोग जेह्वो उपाय आप तेह्वो,
क्रिया असाध्ये व्यर्थ छे न रक्षवा समर्थ छे. ४५

अथ अष्टविध परीक्षा.

दोहरो.

साध्या साध्य विचारवा धारवा भेषज धर्म;
वांचो वात विचारीने कहुं अष्टविध कर्म. ४६

दूत परीक्षा.

छप्पय छंद.

वैद्य बोलावा जाय होय रोगीनी ज्ञाते,
श्वेत वस्त्र परिधान गृहेलुं द्रव्यज हाथे;
खाधुं होय तांबुल वाणी मिठी मुख भाखे,
दृढ चित्त सुशिल वाहनारुढज राखे;
धोळां फळ फुल हाथमां गृहि जाय भैषज गृहे,
शुभ लक्षण ए दुतनुं रोग शरिरे ना रहे. ४७
स्त्री के बे जण होय कोय रोगी अंग हीन,
करकश बोले वाण शोकमां होये लीन;
भगवाँ काळाँ वस्त्र रक्त पहेरेलां होय,
मुशळ दंड जो हाथ आंखमां आंसुँ तोय;
दीन व्याकुळ रडतो अने तैलाभ्यंग करी कदी,
काळ समो ए दुत कह्यो भष्माग्नि साथे यदी. ४८

भुजंगी छंद.

यदि वैद्यने तेडवा दूत वेशे, दिशा दक्षिणे हाथ बांधीज बेसे,
निचे ऊंचे बेसे यदि एक पादे, उभो दुत ते निंद्य छे निर्विवादे. ४९

श्रग्विणि छंद.

सूर्य दीशा तजे दग्ध तेने कहो,
जाय ज्यां तेज धूमित दीशा लहो;
दिप्त दिश जाणीये ज्यां ते वासो रहे,
प्रथम इशान एक प्डीर शास्त्रो कहे. ५०

दग्ध ईशानने पूर्व धुमित छे,
याम आठे रहे एहवी रीत छे;
प्होर प्होरे दीशा एम बदलाय छे,
पांच दिश शांति त्रण दोषी कहेवाय छे. ९१

शांत दिश आवी दुत जो के उभो रहे,
बाम दक्षिण रही मधुर वचनो कहे;
एवा लक्षण थकि वैद्य यश पामशे,
रोगी तन ताप पीडा बधी वामशे. ९२

दग्ध धुमित दिसा महीं जो कदी,
पुंठेथी आवी दुत वाक्य बोले यदि;
दूत निषेध रोगी नहीं जीवशे,
जीवे तो पण नहीं यशनी प्राप्ति थशे. ९३

उपजाति छंद.

बोले मुखे अक्षर ते गणीजे, संख्या सहु अर्धज भाग कीजे;
बाकी वधे शुं त्रण भाग दीजे, शुन्येज मृत्यु प्रथमे न बीजे. ९४

वसंततिलका छंद.

प्रश्नाक्षरो दुत तणा गणी युक्तियेथी,
कीजे पछी त्रण गणा मुळ .अंक जेथी;
बाकी वधे गणीत आठज भाग देतां,
मृत्यु थशे समथी विषम सुख छे त्यां. ९५

२. अथ स्वप्न परीक्षा.

चामर छंद.

जो कदापी स्वप्न मांहे न्हाय तेल दुधथी,
घी थकि करे जो स्नान मान वात योगथी;
श्याम वस्त्र प्हेरी नारी श्याम चंदने हशे,
स्वस्थने थशेज रोग रोगी मृत्यु पामशे. ५६
क्षौरकर्म जो करे के देखे द्रष्ट लग्नने,
आप घेर नाच रंग थाय छे खुशी मने;
झाड प्हाड आदि ऊंचे स्थानथी पडे धशे,
स्वस्थने थशेज रोग रोगी मृत्यु पामशे. ५७
क्षौरना करेल नागा जोगी के गोसांइ को,
काळी लाल पाघ शीश हाथ पाश होय को;
हाथ खड्ग भाला धारी जेनी पासे आवशे,
स्वस्थने थशेज रोग रोगी मृत्यु पामशे. ५८
कान नाक हीन पांगळो के होय कूबडो,
बांधनार चोरने के मारनार सेवडो;
भेंस ऊंट के गधेडे बेसी पुंठे लागशे,
स्वस्थने थशेज रोग रोगी मृत्यु पामशे. ५९
अन्न पक लोह तील लाभ एहनां थशे,
तेल दारु पान कीध नेत्र बेहुए जशे;
आगमां बळे के नीरे डुबे श्वान कर्डशे,
स्वस्थने थशेज रोग रोगी मृत्यु पामशे. ६०

शार्दूलविक्रीडित छंद.

लीलां झाड सुम्हेलके गिरि तणा ऊंचा शिखरे चढे,
विष्टाये निज अंग लेपन कर्युं स्वमृत्यु पोते रडे,
राजा हाथी सुवर्ण गौ हय अने बेलो बहु देखशे,
निरोगी धन लाभ संपत्ति लहे रोगी निरोगी थशे. ६१
बेसे घोळा वृषभ के गज परे ऊंचे स्थळे जो जमे,
नावे बेसी नदी तरे अने वळी अगम्य स्त्री शुं रमे;
सागर जाय तरी अने मनुष्यनुं मांस कदि भक्षशे,
निरोगी धन लाभ संपति लहे रोगी निरोगी थशे. ६२
राता उज्वल रंगना अने वळी पीळां सुवस्त्रो धरी,
रात्रं उज्वल पीत चंदन करी देखे यदि सुंदरी;
मित्रो इंद्र नरेन्द्रने सजीवजो स्वप्ना महीं देखशे,
निरोगी धन लाभ संपत्ति लहे रोगी निरोगी थशे. ६३
कन्या चक्र रथ ध्वजा फळ भर्या वृक्षोना वृंदो बहु,
माळा पुष्प तणी अने दिपकना लाभो थया ते कहुं;
अग्नि धूम्र रहित नजरे पडे के तीर्थ मोटां हशे,
निरोगी धन लाभ संपती लहे रोगी निरोगी थशे. ६४
देखे मंडल चंद्र सूरज तणा के दुध ताजुं पीये,
मच्छर सर्प जळो डशे भमरियो पार नदी पामीये;
किचड मिश्रित पाणीमां थई करी पेले कीनारे जशे,
निरोगी धन लाभ संपति लहे रोगी निरोगी थशे. ६५

१ नाडी परीक्षा.

उपजाति छंद.

घेरायलुं रोगथी अंग जेनुं, करो सुवैद्यो निदान तेनुं,
तंतुकी मूत्र मळ जीभ चार, शब्द त्वचा रुप अने आकार. ६६
कोपेल दीसे कफ पितवात, दोष कयो अल्प अधिक माप,
ज्ञानार्थ कीजे नाडी परिक्षा, आद्यन्त तेनी करवी निरिक्षा. ६७
तारो विणाना बहु राग बोले कळावतो जंत्रज दाव खोले,
तेमज वैद्यो धमनि तपासे, अभ्यासथी स्पष्टज रोग भासे. ६८
नाना कुपथ्ये मळकोप पामे, रोगो बधानुं मुळ एक ठामे,
निदाननो अर्थज रोग जाणो, रोगो तणो अर्थ निदान मानो. ६९
जे वैद्य नाडि जीभ मुत्र जोय, तेनेज रोगो तणुं भान होय,
करे चिकित्सा नहीं सर्व ठामे, रोगी मरे वैद्य यशने न पामे. ७०
व्याधि बळाबळ ने देशकाळ, जोई विचारे दुःखरुप माळ,
पछी चिकित्सा करशे विचारी, ते वैद्य पामे यश किर्त्ति भारी. ७१
अंगुष्ट जे दक्षिण हाथ केरो, मारे अधो भागज नाडी फेरो,
दक्षिण हाथे करी स्पर्श तेनो, जाणो त्रिदोषे नक्कि रोग एनो. ७२
एकाग्र चित्ते मन शांत राखो, दक्षिण हस्ते धमनिज दाखो,
स्त्रीयो तणा रोग निदान काळे नाडीज डाबा करनी नीहाळे. ७३
ग्रहि ग्रहीने त्रणवार मूको, नाडी परिक्षा करता न चूको;
म न बुद्धि तर्के लेजो विचारी, उत्पत्ति रोगो तणी सर्व सारी. ७४
त्रण अंगुलीए स्पर्शज कीजे, कफ पित्त वायु नक्कि जाणी लीजे;
मंदज मध्य अति तीव्र जाणो, त्रीदोषनां लक्षण ए प्रमाणो. ७५
धे बे मळे द्वंदज त्यां कहीजे, त्रीदोष त्यां जो तरणे लहिजे;
साध्य असाध्य अने कष्टसाध्य, नाडी बतावे सहु ते अबाध्य. ७६

नाडी बतावे यदि रोगी आवी, लक्षण तेना दउं छुं बतावी,
मळ मूत्र वेगादिकना भरेला, अभ्यंग तैलादिकनां करेला. ७७
निद्रा महिंथी यदि उठी आवे, स्नान करी कोइ नाडी बतावे,
भुख्यो हशे के अन खाधुं होय, लागी त्रषा नीरनी मंन तोय. ७८
कामातुरो के भयभीत अंगे, मन वातमां के नारी प्रसंगे,
एवां नरोनी नहि नाडी जोवी, जोईने शुं फोकट कीर्ति खोवी. ७९
स्त्रीयो तणी वामज हस्त पादे, दिशे रुढि शास्त्रज निर्विवादे,
पछी अनुभव पोता तणो जे, सर्वोपरि तर्कज जाणी लीजे. ८०
रत्नो तणा जे गुण दोष जाणे, अभ्यास तर्के सहु ते वखाणे,
उपाय बीजो नहीं चाले एक, नाडि परिक्षा करवो विवेक. ८१
वायु तणी नाडी ब्रह्मा स्वरुप, पित्त दोष कोपे शंकर रुपे,
कफ नाडी जाणो विष्णु स्वभावे, त्रिदोष देवो त्रणथी बतावे. ८२
अग्रे वहे वातज नाडी जाणो, मध्ये वहे पितज ते प्रमाणो,
अंते वहे छे कफ व्याधि नाडी, रुपो कहूं भिन्नज ते पछाडी. ८३
वांकी गति वायुनि नाडी चाले, कुदे पडे पित्त गति उछाळे,
मंद गतिथी कफ रोज दीसे, त्रिदोषमां तीव्र गति अतिशे. ८४

शार्दूलविक्रीडित छंद.

चाले सर्प जळो तणी गति अति वायु तणा वेगमां,
कागा मंडुक तितरो सम चले पित्तो तणा योगमां;
राजा हंस कपोत कुकट समि श्लेष्म गति ए सही,
सन्निपात त्रिदोषमां सहु मळे एके अधूरी नहीं. ८५

भुजंगी छंद.

दिसे तिर्जनी पास वायुनी रीते, वहे मध्यमां आंगुली पास पीत्ते,
कफाधिक्य अनामिका पास जाणो, त्रिदोषे त्रणे आंगुलीने वखाणो. ८६
गति सर्पने देडकानीज चाले, वळी वांकीने कुदति स्पष्ट हाले,
वहे मध्यमा तर्जनी हेठ ज्यारे, कहो वायुने पीतनी नाडी त्यारे. ८७

जुवो सर्पने हंसनी चाल जेम, स अनामिका तिर्जनी पास तेम;
वहे मंद वांकी करो लक्ष तेनुं, कहो वायुने श्लेष्म छे मिश्र एनु. ८८
हशे देडका हंसनी चाल जेम, धसे मध्य अनामिका पास एम;
कुदे उछळे ने वळी मंद जेह, कफाधिक्य छे पित्त जाणोज तेह. ८९
कुटे काष्टने जेम पक्षी सुथार, वहे वेगथी तेम ते वारवार;
लहो कूदतीने वळी स्थिर ज्यारे, सन्निपात त्रिदोषनो रोग त्यारे. ९०
गति नाडिनी होयजो एक रीते, सुखिनी वहे त्रिशने त्रिश नित्ये;
वही स्थिरथी तीव्रने स्थिर थाय, लही मृत्यु रोगी यमद्वार जाय. ९१
फुलेलीने गंभीर ते मांस वाही, रहे उष्ण जलदि वहे ताव मांहि;
हशे काम के क्रोधमां वेगवान, भयभीत चिंतातुरे क्षीणमान. ९२
जड उष्णने रक्तथी पूर्ण जाणो, जड मात्रने आम वायु प्रमाणो;
वहे वेगथी हलकी अग्नि दिसे, रहे स्थिर वाही जुओ तृप्ति युक्ते. ९३
स चापल्यता ते क्षुधातुर प्राणी, वहे मंद धातुक्षयी ते वखाणी;
घणी मंद चाले कहो अग्नि मंद, विधिए कही नाडि तीलक्ष वंद. ९४

नाडिनां असाध्य लक्षण.

शार्दूलविक्रीडित छंद.

चाले मंदज मंद शीथिल वळी शीथिल ने व्याकुळी,
थाये व्याकुळ ने पछी रही रही धीमी वहे छे वळी;
देखाये क्षणमां वळी कर तणा मूळे क्षणे अंगुली,
स्थान भ्रष्ट थइ वहे विधविधे काळस्वरुपे मळी. ९५

उपजाति छंद.

घणुं करीने स्थिर नाडि चाले, मध्ये वळी विद्युत जेम हाले;
दीन एक रोगी जरुर जीवे, बीजे दीने मो'तनु पान पीवे. ९६

वसंततिलका छंद.

जोतांज पित्त ताणि गति नाडी जणाय,
मध्ये वळी कफगति अनिल थाय;
धीमी पछी वहि पछी अति तीव्र थाय,
चक्रे चढे ज्यम वहे जमपूर जाय. ९७

नाराच छंद.

घणीज कांपती वळी देखाय थोडी हालती,
ने मंद जेवी थाय ने जणाय पाछी चालती;
के चाली मंद तीव्र थाय थाय मंद एमरे,
असाध्य जाणी छोडवी नथीज तेने क्षेमरे. ९८

दोहरो.

शीघ्र वहेमळ कोपमां, अथवा लागे शीत,
बीजे दिन मृत्यु थशे, ए'वी एनी रीत. ९९

भुजंगी छंद.

वहे तिव्र नाडी गति वायु मांही, वळी शीतथी शीतळा होय क्यांही,
पसीनो वळी चीकणो सर्व ठामे, जीवे सात रात्री पछी मृत्यु पामे. १००

तोटक छंद.

अंग शीत अने मुख श्वास पळे, धमनी अति तीव्रने दाह बळे,
करीने सुविचारज एम कह्युं, दिन पंदर आयुष बाकी रह्युं. १०१

शालिनी छंद.

वायु नाडी व्हारथी दीसे नाहीं,
अंतर्यामि शीतळा होय क्यांहीं;
ग्लानि दीसे नाडी मंद वहीने,
मृत्यु पामे त्रण रात्री रहीने. १०२

भुजंगी छंद.

वहे नाडी रोगी तणी सूक्ष्म किम्वा,
अति वेगवाळी घणी होय किम्वा;
वहे शीतळा शीतनुं जोर भारे,
तजो वैद्य नाडि नकी एज मारे. १०३

वसंततिलका छंद.

नाडी वहे कदि कदि विजळी स्वरुपे,
दिसे वळी नहिं कदि यदि झाझां रुपे;
चैतन्य ज्ञान क्षणमां क्षणमां न शुद्धि,
जीवे नहीं बहु श्रमे सुविचार बुद्धि. १०४

शालिनी छंद.

नाडी चाले ऋष्ण वांकी गतिए,
सर्पाकारे वेगवाळी थति ए;
कंठे जेने रोधतो श्लेष्म भारे,
निश्चे जाणो रोग रोगीने मारे. १०५

मालिनी छंद.

भ्रुजति भ्रुजति चाले, चंचला तीव्र वेगी,
शितळ शितळ दीसे नासिका श्वास भेगी;
कठिण जिवित तेनुं प्होर बे प्होर मध्य,
नकि जशे यमद्वारे वैद्य विचार सद्य १०६

उपजाति छंद.

त्रिदोष नाडी अति तिव्र चाले, अग्नि समो ताव मध्यान काळे,
जीवेज रोगी दीन एक तेह, बीजे दीने आवरदानो छेह. १०७

स्रग्विणी छंद

एग महीं मात्र नाडीज जेनी वहे,
श्रम करी हाथमां बहु जुवे ना लहे;
बंध मुख होय पण दंत देखाय छे,
वैद्य तज रोगी यमद्वार ते जाय छे. १०८

मालिनी छंद.

पित कफ अने वायु एकठा थाय ज्यारे,
एकज समय नाडी आश्रये जाय त्यारे;
कदि कदि नर एवा यत्नथी साध्य थाय,
अति घणा नर एवा मृत्युने द्वार जाय. १०९

ज्वरनी नाडी.

प्लवंगम छंद.

वक्र चपळने शीत वात ज्वरमां वहे,
तीव्र सरळनी चाल पीत ज्वरमां कहे;
स्थिर शीतने स्निग्ध श्लेष्मज्वर जाणीये,
चपल कठिन जो होय वात पित आणीये. ११०
श्लेष्म वातनी मांहे मंद दीसे कदा,
स्थिर श्लेष्मने शीत पीत श्लेष्मे सदा;
ए विध नाडिज्ञान शास्त्र मांही कह्युं,
तिलकचंद मन ध्यान धरी सर्वे लह्युं. १११

दोहरो.

नाडी हंसगति वहे के गजगति समान;
मुख प्रसन्न निरोगीनुं निश्चे करो निदान. ११२

४. अथ मूत्र परीक्षा.

उपजाति छंद.

रात्रि घटिका रहे चार ज्यारे, ऊठाडवो निश्चय रोगी त्यारे,
कांसा तथा काचना पात्र मध्य, मुत्र ग्रहो वैद्य विचारी सद्य. ११३
आदि अने अंतनी धार छांडो, ज्यां मध्य धारा तहीं दृष्टि मांडो,
सूर्योदये मूत्रजने तपासो, रोगो तणा भेद बहु प्रकाशो. ११४
धोळुं दिसे वायु तणे विकारे, पीतरक्त वरणे पीत होय ज्यारे,
फिण युक्त धोळुं कफ रोग मांही, देखाय काळुं त्रण दोष मांही. ११५

छप्पो.

नील वर्ण के रुक्ष कोप वायुनी मांही,
तांबुल वर्णे तैल जेवुं पित होये ज्यांही;
चिकणुं धोळुं जेह श्लेष्म रोगी ते कहीये,
रक्त विकारे ऊष्ण चीकणुं लाल लहीये;
रस बीजोरां जेहवुं अथवा कांजी सारखुं,
जळ किम्वा चंदन समुं अन्न पच्युं नहीं पारखुं. ११६

वसंततिलका छंद.

चोखा तणा धुवण जेम अजीर्ण मध्य,
धुम्रो समुं अति घणुं नव ज्वर सध्य;
जे ऊष्ण धूम्र पित मळ्युं पित वात जाणो,
धोळुं अने फीण मळ्युं कफ वात माणो. ११७

उपजाति छंद.

कफ पित रातु बहु घाडुं दीसे, जीर्णज्वरे पीत रातुं अतिसे;
त्रिदोष कोपे सहु भात वर्ण, धारो विधिए सहु भात कर्ण. ११८

शार्दूलविक्रीडित छंद.

जो इच्छा मन रोग निश्चय तणी राखो तमे एकदा,
पात्रे मूत्र भरी पछी सळी वते बिंदु सु तैले तदा;
बिंदु तैल तणुं पडे प्रसरे जो ते साध्य निर्विघ्नतुं,
स्थिरे कष्टज साध्य डूबतुं कदा मृत्यु थशे तेहनुं. ११९

मदीरा छंद,

तैल धरो जळ मुत्र महीं जशे पूर्व दिशा भणी साध्य गणे,
दक्षिण जाय अति ज्वर होय तथापि सु औषध रोग हणे;
उत्तर तेम वहे बहु क्षेम निरोगी हशे नर एम कहो,
पश्चिम जाय अति सुख थाय दिशा कही चार विचारी लहो. १२०

दुमिला छंद.

जब बिंदु सुतैल ईशानदिशा जशे एकज मासमां मृत्यु थशे,
नैरुत्य वही महिं छिद्र पडे यमद्वार भणी नकि शिघ्र जशे;
एक मास महिं वळी तेह मरे जब अग्निदिशा भणी बिंदु धसे,
भले साध्य तथापि न जीवे कदि यदि वाव्यादिशा भणी बिंदु खसे. १२१

दोहरो.

खडग दंड धनुष्यनो थाय तैल आकार,
निश्चे ते रोगी मरे घणा ग्रंथ मत सार. १२२
पद्म हाथी के हंस सम चामर छत्र समान,
बने सरोवर सारखुं साध्य लहो गुणवान. १२३
चालणी जेवा छिद्र जो थाय तेलनी मांहे,
दोष कहो ए पितृनो मागो प्रभुनी साहे. १२४

उपजाति छंद.

मनुष्यके मस्तक बे तणोरे, आकार दीसे भुतदोषनोरे,
मंत्रादि तंत्रे करी शांत तेने, पछी दीओ औषध योग्य एने. १२५

दोहरो.

वात विकारे सर्प सम पित्तमां छत्राकार,
मोतीबिंदु कफ रोगमां त्रिदोष त्रण प्रकार. १२६

३. मळ परीक्षा.

दोहरा.

धूम्र वर्ण त्रुटित अने फीण सहिते होय,
बांधेलो काळो सदा वात रोगमां जोय. १२७
पीळो ने रातो जरा पित्त विकारे जाण,
धोळो फीण मळ्यो मृदु कफ व्याधिज प्रमाण. १२८
पीळो तांबुल वर्णनो वात पित गद तेह,
श्याम पींत तुटेल ते पित्त वायु मळ जेह. १२९
पीळो काळो चीकणो जरा नरम कफ पित्त,
दुर्गंधी त्रुटित अने काचो अजीर्णे पीत. १३०
काळो पीळो श्वेतने होय गांठ सहित,
बहु रंगी मळ जेहनो त्रिदोषे एवी रीत. १३१

शार्दूलविक्रीडित छंद.

वातादि क्षीण थाय मळने जुवो पीळो ने गांठो मळ्यो,
पीळो दुर्गंधी मळ्यो कटि दुखे वायुज आमे कळ्यो;
धोळो दुर्गंधी जळोदर महीं काळो क्षई रोगमां,
मंदाग्नि पातळ लहो त्रुटितते तिक्ष्णाग्निना जोगमां. १३२

मालिनी छंद.

अरुण वरण पीळो श्यामने श्वेत होय,
चकचक अति ऊष्ण मांस जेवोज जोय;
बहु विध बहु रंगी चित्र वीचित्र दीसे,
तज तज तज भाई मृत्युनुं पान पीसे. १३३

૪. શબ્દ પરીક્ષા

દોહરો.

સ્વર મોટો કફ રોગમાં પિત્તમાં બોલે સ્પષ્ટ,
ઘુર ઘુર બોલે વાયુમાં ત્રિદોષ તરણે કષ્ટ. ૧૩૪

૫. સ્પર્શ પરીક્ષા.

દોહરો.

ઉષ્ણ અંગ રહે પિત્તમાં, શીતળ દીસે વાત,
કફ રોગે અંગ ચીકણું, ત્રિદોષ તરણે ભાત. ૧૩૫

૬. જીભ પરીક્ષા.

છપ્પો.

ઠંડિ સૂકી અને ફુલેલી વાયુ રોગે,
હોય રક્તને કૃષ્ણ પિત્ત વાયુને જોગે;
ચિકણી ધોળી હોય શ્લેષ્મનો રોગજ જાણો,
કંટકવાળી કૃષ્ણ શુષ્ક સનિપાત વખાણો;
દ્વંદ્જ રોગે જાણવી બેસ્વાદી બેરંગ છે,
ત્રિદોષમાં તરણે મળે જેવો જેનો સંગ છે. ૧૩૬

૭. નેત્ર પરીક્ષા.

દોહરા.

રુક્ષ વર્ણ જે નેત્રને કિંચિત દીસે લાલ,
સ્થિર રહે નહીં બહુ ફરે વાત નેત્રનો તાલ. ૧૩૭
પીળી અથવા લાલ કે લીલી આંખજ થાય,
દીપક દ્રષ્ટે નવ પડે પિત્ત નેત્ર કહેવાય. ૧૩૮

पाणी भरेली चीकणी तेजहीन ने श्वेत,
तिलकचंद कफ नेत्र ते जाणो रोग समेत. १३९
सर्व दोष मळे एकठा लक्षण सर्व सहित,
त्रिदोष तेने जाणजो नेत्र परीक्षा रीत. १४०

असाध्य नेत्र.

छप्पो.

एक नेत्र रहे बंध एक ऊघाडुं दीसे,
ऊघाडुं विकाळ वांकडुं होय अतिसे;
नहीं देखाये कांई वांकु ऊपर चढेलुं,
देखे भयंकर दृष्ट दृष्टि पासेज पडेलुं;
बहु बारिक शिरा फुटे नेत्र चेतना हिन छे,
असाध्य मृत्यु पामशे जाणो दुःखमां लीन छे. १४१

दोहरा.

दीसे भयंकर एक नेत्र बीजुं होय जो बंध,
त्रण दिवस ते जीवशे लाग्यो मृत्यु धंध. १४२
रक्त वर्ण काळी जरा दीसे भयंकर जेह,
तजो वैद्य निश्चे जशे मृत्यु धाममां तेह. १४३

चोपाई.

तेज हीणने किंचित काळी, वैद्य जुओ ए आंखो भाळी,
नक्की जाशे यमद्वारे मरी करो परीक्षा दीलमां धरी. १४४

८. मुख परीक्षा.

चोपाई.

वाते मधुर मुख कडवुं पीत,
मधुर खाटुं कफरोगनी रीत;

घृत भर्युं जेम अजीर्ण थयुं,
अग्निमंद कशायज कह्युं. १४५

९. स्वरुप परीक्षा.

तोटक छंद.

कर पादने केश ते फाटी जशे,
अंग श्याम स्वरुप अधिक हशे;
स्मृति बुद्धि सुचेष्टित मैत्रि नहीं,
बबडे मुख प्रकृति वायु कही. १४६

पित स्निग्ध स्वरुप छे अग्नि थकी, तृष्णावान क्षुधातुर उष्ण नकी,
कर पाद अने मुख लाल रहे, अभिमान पित्ते शुरवीर कहे. १४७

कफ रुप छे चंद्र समान जुवो,
कहुं प्रकृति संशय सर्व खुवो;
बहु शीतल अंग सुशोभित छे,
कहे सत्य सदा निरलोभित छे. १४८

हाडसंधी अने दृढ मांस वळी त्वक् स्निग्ध दीसे रग छे कुमळी,
सुख शोक त्रषासर्म शांत रहे, गुण सात्विक बुद्धि महंत कहे. १४९

दोहरो.

वायु पित्तने कफ तणा कह्या प्रकृति भेद,
तिलकचंद तर्के लहो अनुपम आयुर्वेद. १५०

इतिश्री आयुर्वेदांभो निध्यंतर्गते वैद्यकशास्त्रे वैद्य शा. तिलकचंद विरचिते "वैद्य विजय" नामा ग्रंथे अष्टविध परीक्षा निरुपण नाम

प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ आयुर्लक्षण.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रथम परिक्षा [illegible] आयु छे के केम,
आयुने औषध [illegible] थाय रोगीने क्षेम. १

[illegible] छंद.

रोगीना मुख नेत्रने [illegible] ते सोम्य प्रसन्न हशे,
नाशा श्वास वहे [illegible] वळी सुगंध सारी रसे;
जीव्हा कोमळ ताव [illegible] कंठ ने श्लेष्म कदा,
दाह स्वल्प न शीन [illegible] साध्य ते रोगी सदा. २

[illegible] लक्षण.

जे रोगी जळ मध्य बिंब [illegible] चंद्र तणा पूर्व के-
पश्चिम दक्षिण उत्तर [illegible] जुए छीद्र सहित थके;
छ बे एक अनुक्रम [illegible] वळी मृत्यु दीवसो कह्या,
धुम्रे दश दिन [illegible] निश्चे करीने लह्या. ३

[illegible] छंद.

जो जीभके भृगुटि [illegible] तणो अग्र भाग,
जोतां जणाय [illegible] बहु विध लाग;
काने बेहु [illegible] यदि शब्द नावे,
मृत्यु थशे नकी [illegible] यमपूर जावे. ४

[illegible]

नव दीन [illegible] देखे कदी,
दीन पांच [illegible] नेत्र यदि;
नहीं [illegible] सात रहे,
त्रण दीवस [illegible] अग्र कहे. ५

भुजंगी छंद.

अकस्मात जाडो अने स्थूळ थाशे, घणो स्थूळ ते सूक्ष्म रुपे जणाशे;
थशे शांत क्रोधि अने क्रोधि शांत, खट मासमां काळभेदे कृतांत. ६
थशे जीभ काळी हशे मूख रातुं, नथी जीभथी स्पर्शनुं ज्ञान थातुं;
यदि देव रक्षा करे जो तथापि, नकि मृत्यु पामे न जीवे कदापी. ७

शार्दूलविक्रीडित छंद.

रात्रे दाह बळे अने दिवसमां ठंडिज लागे बहु,
कंठे श्लेष्म मुखे नहीं रुचि वळी रातांज नेत्रो कहुं;
नाडी झीणी जणायने वळी कदि फुलेली जाडी हशे,
जीव्हा काळी कठोर ते पुरुषनुं जाणोज मृत्यु थशे. ८

छप्पो.

अंगे काळा डाघ दंत पंक्तिओ काळी,
नाक समिपे सार ठंडी छे जगा रुपाळी;
हाथ पगोने कान होय जो लुलां शीत,
एक आंख छे लाल अंग ठंडुं ए रीत;
ऊष्ण श्वास छोडे घणो कार्याकार्य समजे नहीं,
स्मर्ण प्रभु ए औषधी यमद्वारे जाशे सही. ९

भुजंगी छंद.

दीसे शीतने मस्तके श्वेद भारे, जुए चीकणुं अंग रोगीनुं ज्यारे,
कफे रोधीयुं कंठनुं द्वार एवुं, जशे मृत्यु पामी यमद्वार के'वुं. १०

सोरठा.

शरिरने स्वभाव, बदलाए अण चिंतव्यो,
लागे यमनो दाव मृत्यु थाशे तेहनुं. ११

भुजंगी छंद.

[illegible] कदि नाज सुणे, सुणे तोय ते ऊलटी वात सुणे,
[illegible]ेग भारी, बहु कष्ट वेठी करे मृत्यु यारी. १२

वसंततिलका छंद.

ठंडी जणाय अति ऊष्णज वस्तु जेने,
ऊष्णो बहु विधि तणा शित लागे तेने;
तिक्तो गळ्या अने गळ्या कडवा जणाय,
जाणे न स्वाद जीभनो यमपूर जाय. १३

शार्दूलविक्रीडित छंद.

मारे तो समजे नहीं अने नहीं मारे पोकारे बहु,
जाणे धुम्र थकी भयुं निज तणुं देखे शरीर सहु;
सुगंधे दुरगंध गंध न लहे नाशानुं (ज्ञान) जातुं रह्युं,
ते रोगी यमद्वार निश्चय जशे जाणी विचारी कह्युं. १४

तोटक छंद.

निज अंगते राई थकीज भयुं, रुप रंग शरिरनुं सर्व फर्युं,
जुओ चंदन चर्चित अंग छतां, निलमक्षी डसे पंचत्व गता. १५

सवैया एकत्रीशा.

रवि प्रकाश रात्रे देखाए दीवसे चांदरणा देखंत,
गाडी पालखी विमान घोडा आकाशे देखे अत्यंत;
पृथ्वि वस्त्र थकी पथराई वायु देह धारी देखाय,
जाणे लोक सहु जळनी मांहे पडे पडेने डुबी जाय. १६
कमळ पांखडी खील्या प्रमाणे देखे पृथ्वि फाटी जेम,
आकाशे तारा चांदरणा नहीं देखे आंखोथी एम;
दीवसे नक्षत्रो आकाशे भड भड भड भडके बळतां,
तिलकचंद रोगीओ एवा यमद्वारे दीसे पळता. १७

वसंततिलका छंद.

जे आरसी महीं नहीं प्रतिबिंब देखे,
छांया नहीं निज तणी तडकेज पेखे;
देखे यदि पण नहीं सहु पूर्ण भासे,
आरोग्य रोगी थईने यमपूर जाशे. १८

भुजंगी छंद.

जशे तेज लक्ष्मि अने लाज शक्ति,
जशे रुप कुरुप थै सर्व शक्ति;
अकस्मात सौ जाय के सर्व आवे,
मरे रोगी त्यां काळनुं जोर फावे. १९

उपजाति छंद

निचे तणो होठ निचे ढळे छे, जिभो रहो उपर ते वळे छे,
काळो पडे के यदि पाकी जाय, जरुर रोगी यमपूर जाय. २०
दांतो जणाए यदि लाल काळा, ढळ्या सरीखा हसता रुपाळा,
दुर्घट दीसे बहु रुप वर्ण, निश्चे जवा ते यमनेज शर्ण. २१
जो चीकणीने अति जीभ काळी, पणीज शुन्य नहीं स्वादवाळी,
अंकुर फुटे बहु दुख पामे, मृत्यु पळी ते दुःखथी विरामे. २२
बांकुं दीसे के यदि झाझुं फुले, हुलाय किम्वा फरके अतुले,
तुटेलुं दीसे यदि नाक ज्यारे निश्चे कहुं ते मरशेज त्यारे. २३

दोहरा.

पांपण बे नेत्रो तणी ज्योती जाय अपार,
घणुं शिघ्र मृत्यु थशे निश्चे ते निरधार. २४

तोटक छंद.

लीये ग्रास मुखे न चवाय यदि, शिर स्थिर रहे न जराय कदी,
गति भंग अने स्थिर दृष्टि रहे, संनिपातिन ततक्षण मृत्यु लहे. २५

वसंततिलका छंद.

उठाडतां वळी वळी पळी मोह पामे,
आरोग्य रोगथी भवा पळ बुद्धि वामे;
वृक्षो थकी जेम पडे फळ पक्क तूटी,
मृत्यु थशे नकी जशे देह प्राण छूटी. :२६

दोहरा.

अति पछाडे हाथ पग घडी घडी चाटे होठ,
भूतंप्रेत सम बोलतो प्रेत रुप ते ठोठ. २७
विष खाधा विण इंद्रिना छीद्र वाळथी रक्त,
वहे मरे ते ततःक्षणे रोगी होय अशक्त. २८

तोटक छंद

औषध अति उत्तम वैद्य करे, तेम तेमज रोग अति उभरे,
बळ मांसज क्षिण थशे क्रमथी, तज वैद्य शुं काम मरेछ मथी. २९

उपजाति छंद.

निशदीन निंद्रा आवे अतिशे, निशदिन निंद्रा नहीं नाम दीसे,
वातो करंतां यदि मोह पामे, शिघ्रे जशे ते यमने मुकामे. ३०

तोटक छंद.

यक्ष राक्षस भूत पिशाच अने,
नजरे पडे रोगी विचार मने;
बळवान छतां बचशे न कदी,
धनवंतरी रक्षक होय यदि. ३१

इतिश्री आयुर्वेदांभो निध्यंतर्गते वैद्यकशास्त्रे वैद्य शा. तिलकचंद्र विरचिते "वैद्य विजय" नामा ग्रंथे आयुर्लक्षण नाम द्वितियोऽध्याय ॥ २ ॥

समाप्त.

ॐ नमो भगवते श्रीधन्वंतरियैनमः

श्री सुरत वैद्यशाळा.

अर्थात्

देशी वैद्यकशास्त्र भणावी वैद्य बनावनारी निशाळ.

मफत लाभ ! मफत लाभ !

सद्गृहस्थो ! आजकाल आपणे त्यां देशी वैद्यकशास्त्रनी अने वैद्यकना धंधानी अवनति थती जाय छे, तेनुं खरुं कारण एटलुंज छे के, आयुर्वेदोक्त शास्त्र शीखवानी शाळानो अने आश्रयनो अभाव छे.

लगभग एक हजार वर्षथी वैद्यकविद्या विविध प्रकारना आघातोथी हणाती अने पददलीत थवा छतां पण, गुरुपरंपराथी चालता अभ्यासक्रमना प्रतापे घणा सद्वैद्यो उत्पन्न करी पोतानुं गौरव साचवी रही छे; तोपण न्यायी तथा समदर्शी, सत्यप्रिय अने विद्याविलासी, नेकनाम ब्रीटिश राज्यनी शीतळ छायामां वैद्यकशास्त्रने खीलववानो अनुपम समय निरर्थक जवा देवो ए आपणी मोटामां मोटी भूल तथा आळसज गणाय एवा विचारथी दोराईने में आपणा इतिहासप्रसिद्ध सुरत शहेरमां वैद्यशाळा स्थापी, कोई पण न्यातना विद्यार्थीने भणवानां पुस्तको तथा रहेवानुं स्थान मफत आपी, कोई पण रीतनुं लवाजम के फी लीधा सिवाय, वैद्यकशास्त्र संबंधीना मारा ४० वर्षना अनुभववाळा ज्ञान साथे आयुर्वेदना माननीय ग्रंथो भणावी, सद्वैद्यो बनाववा निश्चय कीधो छे. मात्र भोजननी गोठवण विद्यार्थीए पोताने खरचे करवानी छे.

जे विद्यार्थीने वैद्यकशास्त्र रीतसर शीखी, सद्वैद्य थवानी मरजी होय अने जेनी उम्मर अगीआर वर्षथी ओछी अने पंदर वर्षथी वधारे नहीं होय, तेणेज प्रथम अरजी करी, " श्री सुरत वैद्यशाळाना नियमो अने पठण पद्धति " मंगावी लेवां. हालमां वधुमांवधु वीश

विद्यार्थीने दाखल करवामां आवशे; पण गुजराती पांचमा धोरण सुधीनो अभ्यास नहीं कर्यो होय अने जेनी जीभ शुद्ध उच्चार नहीं थतो होय तेवा विद्यार्थीए तो अरजी करवीज नहीं, कारणके संस्कृत-शास्त्र भणवाने शुद्ध वाणीनी खास जरुर छे. परोपकार माटेज आ काम माथे लीधुं छे.

सुरत.
विक्रम् संवत् १९७२ माह सुदी पूर्णिमा
सने १९१६.

शा. तिलकचंद ताराचंद वैद्य.
व्यवस्थापक तथा मालिक
"श्री सुरत वैद्यशाळा."

अमारुं दवाखानुं.

सुरत महिधरपरानी पीआशेरीना टेकरा उपर आवेलुं ज्यां तमाम रोगीनां निदान अने नाडी परीक्षाथी रोगनो निश्चय करी, औषध आपवामां आवे छे.

दवाखानाना नियमो.

१. कोई पण दरदी पासे प्रथमथी पैसा लई तेने माटे खास दवा बनाववामां आवती नथी.

२. कोई पण दरदने माटे मुदत ठरावी अमुक रकम पडवा के टरपवामां आवती नथी.

३. कोई पण जातनी दवा तोलाबंध के तोलबंध आपवामां आवती नथी.

४. कोई पण दरद सारुं थया पछी ईनाम मांगवानो रीवाज नथी.

५. सुरतमां दरदीने घेर जई तपासवानी फी मात्र आठ आना राखी छे बहार गामना दरदीओ तपासवानी फी वखतना प्रमाणमां जुदी ठरावीए छीए.

६. हलकामां हलका चूर्णोथी मांडी गुटीका-पुगळ-तेल-घृत-रसो-उपरसो-आसव-अरिष्टो-अने छेल्ले धातु उपधातुनी भस्मो, रससिंदूर मकरध्वज चंद्रोदय वापरवामां आवे, तोपण एक दिवसनी दवाना मात्र बेज आना लेवामां आवे छे. कोई पण संजोगमां दवानी किंमत वधारे लेवामां आवती नथी.

७. शरीरनी अंदरना रोगो दवा खवडावीने अने बहारनां पाकतां-सडतां, जेवां के कंठमाळ-हाडगंभीर-रांपी-भुडण-नासुर वगेरे भयंकर दरदो शाह पान्दा, मलम पट्टी अने होमोपथीथी सारां करवामां आवे छे.

हमारुं दवाखानुं चालीस वर्षथी चालु छे जेमां सैंकडो दरदीओने आराम थया छे अने थाय छे. भयंकर दरदो सारां थाय छे पण लखेलां सरटीफीकेट लेवानो रीवाज नथी. परंतु जीवतां अने [illegible] सेंकडो सरटीफीकेट विद्यमान छे. जेने विश्वास पडे तेणे श्रद्धा अने धीरज राखी पधारवुं.

मोतनो ईलाज नथी.

पीआशेरीनो टेकरो
संवत १९७२ माघ सुदी १५

सर्वेनो शुभेच्छक
शा. तीलकचंद ताराचंद वैद्य-सुरत.